

पाठ दृष्टि - साहित्यमा

विषय - कविता

रचनाकार - कवीरदास

कवि परिचय

- कवीरदास भवित लोल के निर्गुण भवित्वाद के प्रतिक कवि हैं।
- इन्होंने अद्यात्म के माद्यम से निर्गुण वृह्ण की उपासना की है।
- जन्म - सन् १३९८ई में हुआ।
- कवीर का रहस्यवाद परमात्मा और आत्मा के प्रेम के रूप में प्रकट होता है।
- इनकी भाषा सघुकाढ़ी कही गई है।
साहित्यमें की विशेषता - अलंकारों का सहभाग व सरलता से आगमन तथा उल्लंघनसी की अद्युक्त उपाधि रूपकों और प्रतीकों का समृद्धय है।

कौन्तीय भाव - कवीर ने इन साहित्यमें में सभानों के स्थभवि व परमार्थ का वर्णन किया है। इनमें हुए की भृत्या तथा मनुष्य की सम्प्रेरण से उत्तीर्ण करने की प्रेरणा है। पर सचेत होकर कार्य करने की प्रेरणा है। कवि जो भट्टी तथा खुशहाल के जीवन की अद्याय रूप को भरतुत किया कि व्यक्ति को देश व समाज के लिये आर्थिक कार्य करने से अमरता मिलती है।

भावार्थ -

आद्य - - - - -

उडाय।



- सन्दर्भ - नेतृत्व सारकी हमारी पाठ्य पुस्तक
वासंती के पाठ साहित्य से ली गयी है
इसके कवि कवीर दास जी हैं
 - प्रसाग - इस सारकी में कवि ने सज्जनों के
स्वभाव की विशेषता बतायी है
 - अर्थ - कवीर दास जी कहते हैं कि सज्जन का
स्वभाव सुप के समान होना चाहिए। ऐसा प्रकार
सुप अनाज को अपने में रोक लेता है और
तिनको को ढ़ा देता है। उसी प्रकार सज्जन
अट्टड़ाइया तथा गुणों को अपना लेते हैं और
बुराइया के अवगुणों को त्याग देते हैं।
विशेष - धारा - सद्युक्तकड़ी

③ संकेत साध्या आहे ॥

२ सन्देश - पूर्वानुसार।

प्रसंग - इस रास्ती में कोई दृश्य परी ने विताया कि सज्जन समाज के लोगों का मना करते हैं, घन की जहीं।

अर्थ - कहिए कहते हैं कि समझने को ध्यान की मुख्य जटी वित्तिक सम्मान व प्रेम की इच्छा रहती है। जो व्यक्ति ध्यान की इच्छा रखता है उसे अंत तो समझने तक पहला आ सकता। ध्यान के स्थान पर प्रेम को प्राप्तिकर देने वाला व्यक्ति ही समझने व समाधि का हलात है।

विशेष - पूर्वोन्तसार

③. संकेत - युक्ति - - - - रसरीद ॥
सन्दर्भ - पूर्वानुसार ।

प्रसंग - कविर दोस भी जो इसमें लगाया कि संज्ञन दूसरों की भलाई के लिए ही संसार में पंजम लीते हैं।

अर्थ - कवि कहते हैं कि संज्ञनों का स्वर्गाव युक्ति बनी के स्वर्गाव के समान होता है। जिस प्रकार पैद कभी भी अपना पहल सबंध न रखा कर दूसरों के लिये छोड़ देता है। नदी भी अपना जल स्वभं न पीकर पथिक वृक्षों को पिलाती है। उसी प्रकार संज्ञन लोग दूसरों की भलाई के लिए ही इस संसार में पंजम लीते हैं।

विशेष - पूर्वानुसार ।

४. संकेत - झूठे - - - - गोद ॥

सन्दर्भ - पूर्वानुसार

प्रसंग - इस सार्वी में कवि के लगाया कि असाधी मनुष्य संसार के सुरक्षा को ही सच्चा सुख मान लीता है।

अर्थ - कविरदास जी कहते हैं कि मुख्य प्राणी संसार के नश्वर सुरक्षा को ही वास्तविक सुख मान लीता है और इकुश ही जाता है। संसार में दुखाई देने वाले सुख पहल-भर के लिये ही होते हैं। वास्तव में यह सत्तार मृत्यु को शोजन है जिसें थोड़ा रखने वाली है। जीवन में सत्य के बहुत मृत्यु है।

विशेष - पूर्वानुसार ।

⑤ अकेत - पानी --- परभात् ॥

सन्दर्भ - पूर्वानुसार

प्रसंग - कबीर दास जी ने संसार को
मरवर मानते हुए अनुग्रह का

क्षण - भग्नर कहा है।

अर्थ - कबीर दास जी कहते हैं कि यह संसार
पानी के बुलबुले के समान ही ऐसे बहते
हुए पानी में हवा से बुलबुला उठता है।
और दूसरे पल जट्ठ हो जाता है उसी
प्रकार मनुष्य आज जन्म लेता है और
कुछ समय बाद मृत्यु को नाश होता
है। जैसे ज़वरा होने पर वारे चिक्कप जाते
हैं, उसी प्रकार मृत्यु के आते ही जीवन् ।
संसार के समृद्ध सुरक्षा जाते हैं जैसे ही
विशेष - पूर्वानुसार

6 संकेत - रात = जाय ॥

सन्दर्भ - पूर्वानुसार

प्रसंग - इसमें कवि ने समय के महत्व को
वराया है।

अर्थ - कबीर दास जी कहते हैं कि मृत्यु
मनुष्य यह जीवन् अनमोल है, तुम
इस बात को जही जानते। रात, सोकर तथा
तथा दिन, रवो-पीकर निर्व्यक्त बिता
देते हो। संसार के मरवर सुरक्षा में
इबकर अपना जीवन् भट्ठ कर देते हो।

मनुष्य जीवन् हीरे के समान् अनमोल
है जिसे उसानतावश कोडियाँ को मोल
कर देते हैं। पूरे जीवन् में उसा कोई कोई
नहीं बिया रहे। संसार बड़ा आद रहा है।

प्रश्नों वाले - पूर्वानुसार।

7. संकेत - आज - - - - चाल।।
सन्दर्भ - पूर्वानुसार।।
प्रसंग - इसमें कवि ने समय के महत्व को समझाते हुए अवसर रहते हुए ही सदृकाया को पूरा करने की दैरियाँ दी गई।
अर्थ - कवि कहते हैं कि मनुष्य आज के कार्य को कल पर ठालता है और कल आज पर अगले पल के लिये ठाल देता है। इस प्रकार कल - कल करते हुए पूरा जीवन अतीत के लेता है। अब अभूतम् जीवन परमाणु तथा सत्कर्म करने के लिये मिला है। ही मनुष्य समय के महत्व को समझ तथा कल पर जो ठाल कर छाया आये अवसर को लाभ ढ़ा ले।
विशेषण - पूर्वानुसार।।

8. संकेत - अटकड़ - - - - रवेत।।
सन्दर्भ - पूर्वानुसार।।
प्रसंग - इसमें कवि ने जीवन के समय रहते हुए जो प्रेम करना चाहिए जहाँ तो बाद में पट्टताना पड़सकता है।
अर्थ - कबीर द्वास पी कहते हैं कि जब समय अटकड़ा था, उनीर मुवा था रसरथ था, उस समय न तो हुआ से प्रेम किया और न ही उभयों का त मानी। अब बुढ़ापा आमे पर हुए को समर्झन करने से कोई लाभ जहाँ होता। अर्थात् कवि कहते हैं कि किसान द्वारा समय पर दियाज

न देने के कारण चिकित्सा रक्तदूष
होड़तो लाए मे पढ़तावा करने से
कोइ लाभ नहीं थह अवसर लात कर
मही आता है।

विशेषज्ञ - पूर्वानुसार

9. संकेत - माती - - - तीय ॥

सन्दर्भ - पूर्वानुसार

प्रलग्ग - प्रस्तुत सारवी मे लताया कि
बड़ो छोटो छोटो का अपमान
मही करना चाहिए।

अथ - कृषि करते हैं कि मिट्टी के
बत्त बनाने के लिये कुम्हार मिट्टी
को मुलायम करने के लिये रोकता है
अपने साथ इस व्यवहार से दुःखी होकर
मिट्टी कहती है कि जिस पुकार ते
मुझे रोक रहा है एक दिन होसा आया।
जब तेरी मुख्य होएगी तू मेरी भीच
ही आएगा। अधोत मुझमे (मिट्टी)मे
मिल जाएगा तक मैं इस अपमान का
बदला लूँगी। अधोत कभी भी छोटो
को अपमान नहीं करना चाहिए कभी
भी कभी छोटो को कभी अवसरप्राप्त
होता है।

विशेष - पूर्वानुसार

No.

Date: / /

10

संकेत - यह --- हाथ ॥
सन्दर्भ - पूर्वानुसार

प्रसंग - कबीरदास जी कहते हैं कि यह
शारीर नारोपण है इसके प्रति
लगाव रखना उचित, नहीं है।

अधेर - कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य,
जिस शारीर को त्रै साध लिये फ़िरता है,
वह तो कर्त्त्व पद के समान है अभीत एक
पल में नष्ट होने वाला है जिस मुकार
कर्त्त्वा पड़ा जरा सी ठोकर लगाने पर
दृढ़ भाता है। तसी भक्ति, भक्ति शारीर मुत्कृ
उनाने पर नष्ट हो जाता है आप रवाली,

हाथ - इस समार से चला जाता है अपने

साध - कुछ नहीं ले जाता जो उसे कुछ

प्राप्त होता है।

विशेष - पूर्वानुसार